



# जीवन सौरभ

*Shivmani Geriatric Home*

Apr - June 2019

Volume 17

*A Unit of Global Hospital & Research Centre*



## अंदर देखिए

उसके पार जाना है	...१
गॉडली स्टुडेन्ट	...१
मातेश्वरी जगदंबा स्मृति दिवस	...२
अनुपम दृश्यावली	...३
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	...७
विशेष एक्टिविटी	...७
दिव्य दर्पण	...८
भावभीनी श्रद्धांजलि	...९

## उसके पार जाना है

यदि हमारे विचारों की गुणवत्ता हमारे शारीरिक स्वास्थ्य, आस-पास के वातावरण और हमारे संबंधों को प्रभावित कर सकती है, तो यह निश्चित रूप से भगवान के साथ हमारे संबंधों को प्रभावित करेगा। भौतिक शास्त्र के विपरीत जिसमें असमान बल (सकारात्मक और नकारात्मक) एक दूसरे को आकर्षित करते हैं, आध्यात्मिकता का



मूल सिद्धांत यह है कि समान बल एक दूसरे को आकर्षित करते हैं। यदि हमारा मन नकारात्मकता के चक्र में फँस जाता है तो हमारे और भगवान के बीच की असहमति हमारे और उसके बीच दूरी पैदा करेगी। एक आत्मा होने के नाते, आध्यात्मिक ऊर्जा व आध्यात्मिक प्रकाश होने के बारे में जागरूकता के साथ, हमें अपने विचारों और उनकी गुणवत्ता पर एक निश्चित मात्रा में महारत हासिल होने लगती है। साथ ही नकारात्मकता को खत्म करने की प्रक्रिया में तेजी आती है। बस शरीर की सीमित चेतना और शरीर के संबंधों को छोड़ना नहीं अपितु उनसे दूर हटना उसी तरह नकारात्मक सोच को रोकता है जैसे कि बस एक स्विच लगाने से प्रकाश होने से अंधेरा खत्म हो जाता है।



यदि खोजकर्ता अपने धरैलू



देशों से आगे कभी नहीं बढ़े होते तो वे इस विश्वास में दृढ़ रहते कि दुनिया के बाकी हिस्सों का अस्तित्व ही नहीं था। उसी तरह अगर हम खुद को केवल शारीरिक और सीमित

सोच के दायरे में रहने की अनुमति देते हैं तो हम घोषणा करते हैं कि इससे परे कुछ भी नहीं है। यह तब होता है जब हम अपनी पिछली सोच की सीमाओं से बाहर जाने का प्रयास करते हैं, ताकि हमें और खोज करने का मौका मिले। प्रेम, सत्य और सौंदर्य के स्रोत की खोज हमें न केवल अपने शरीर, बल्कि अन्य मनुष्यों और स्वयं से परे देखने की क्षमता लाती है। स्वयं को एक शाश्वत आत्मा के रूप में देखने और अपने मन को अनुशासित करने के अभ्यास के माध्यम से हम भगवान के अस्तित्व और प्रकृति की खोज और उस एक के साथ गहरा रिश्ता होने की संभावना पैदा करते हैं।

बी.के. ओम भाई  
प्रोजेक्ट मैनेजर  
शिवमणी होम

## गॉडली स्टुडेन्ट

सर्वशक्तिवान शिक्षक स्वयं परमपिता परमात्मा हमारा पिता भी है व शिक्षक भी है। वे सर्व समर्थ, सर्व गुणों व शक्तियों का भंडारी भी हैं। हम आत्माओं को अपना बच्चा बनाते हैं व उनके पास जो कुछ भी है वह सब कुछ हमारे ऊपर न्यौछावर कर देते हैं। आप समान बनाने के लिए यदि वे सर्वशक्तिवान शिक्षक के रूप



में है तो हम बच्चों को भी श्रेष्ठ शिक्षाधारी के रूप में देखना चाहते हैं। वह शिक्षक होने के नाते हमें अपनी उन शिक्षाओं को धारण करने हेतु विधि भी बताते हैं कि कहाँ-कहाँ हम कमी कर देते अथवा पुरुषार्थ में कहाँ पर चूक हो जाती है, फिर उस कमी को कैसे दूर किया जाए उसकी युक्ति भी साथ-साथ हमें बताते हैं तो ऐसा है हमारा सर्वशक्तिमान शिक्षक!

वे सर्वशक्तिमान परम शिक्षक हमें शक्तिसेना के रूप में देखते हैं



कि उनकी शक्ति सेना में हरेक के पास सभी सर्व शक्तियाँ रूपी शस्त्र हर समय उपलब्ध हैं, अथवा समय प्रमाण शस्त्रधारी बनते हैं या फिर समय प्रमाण शस्त्रधारी बनने का प्रयत्न करते हैं। ऐसे में कभी तो माया पर वार कर सकते व कभी माया से हार खा लेते। बाबा तो यही चाहते हैं कि उनके सभी बच्चे सदा ही सर्व शक्तियों से सुसज्जित रहें व श्रेष्ठ शिक्षाधारी

बन मायाजीत बनें। बाबा सावधान करते हैं कि यदि कोई भी शक्ति धारण करने में कमी कमजोरी रह गई तो वही माया के प्रवेश करने का द्वार बन जायेगी। लौकिक में भी हरेक शिक्षक की ये अपेक्षा होती है कि उसका विद्यार्थी इतना लायक हो कि न केवल अपने लिए बल्कि औरों को भी कुछ दे सकने के काबिल बनें, तो यहाँ तो हमें पारलौकिक व सर्वोच्च शिक्षक मिला है। अतः अपना व्यक्तिगत पुरुषार्थ ऐसा हो जो स्वयं के साथ-साथ सर्व को भी आगे बढ़ाने के निमित्त बनें। इसके लिए सर्वशक्तिमान शिक्षक युक्ति बताते हैं कि साहस को अपना साथी बना लो तो सफलता सदा साथ देती रहेगी। वृत्ति एकदम अनासक्त हो क्योंकि ईश्वर के साथ सर्व संबंध जोड़ने से देह में जो अनेक संबंधों से अल्पकाल सुख की आकर्षण, अल्पकाल के सुख की अधीनता व प्राप्ति की इच्छा समाप्त हो जाए। गॉडली स्टुडेंट को अपने जीवन में उन्नति लाने के लिए, अपनी आंतरिक शक्ति बढ़ाने के लिए व भविष्य ऊँची प्रालब्ध बनाने अर्थ सदा स्वचिंतन और प्रभुचिंतन में रहने से सर्वशक्तिमान शिक्षक की शिक्षायें सदा स्मृति में रहेगी। स्वचिंतन में रहने से योगयुक्त भी रहेंगे व इससे योगबल भी जमा होगा, जिससे हर बात सहज हो जाएगी। अगर बातों का चिंतन होगा तो परिस्थिति कठिन होती जाएगी और मदद मांगते रहेंगे, मदद खींच नहीं सकेंगे। मदद मिल नहीं रही इसी फीलिंग से उमंग-उत्साह कम हो जाएगा। अतः स्वयं पर पूरा अटेंशन बहुत आवश्यक है। श्रेष्ठ शिक्षाधारी बच्चे परचिंतन से सहज ही मुक्त रहने वाले और अन्य को भी मुक्त कराने वाले होंगे। गॉडली स्टुडेंट बच्चों की अन्य निशानियाँ इस प्रकार हैं—

- विश्व परिवर्तक अर्थात् स्वपरिवर्तन से विश्व का परिवर्तन करने वाले व सुनहरे सवेरे के श्रेष्ठ समय को लाने के निमित्त होंगे।
- डबल काल पर विजयी अर्थात् एक काल 'समय', दूसरा काल 'मृत्यु' के वशीभूत नहीं।
- बाबा के फरमान प्रमाण चलने वाले होंगे, समय प्रमाण करने वाले नहीं बल्कि पहले से तैयारी करने वाले होंगे।
- सदा सर्व शक्तियों रूपी शस्त्रधारी होंगे। सदा अलर्ट व एवररेडी रहेंगे।
- स्वयं शक्ति संपन्न तो होंगे, साथ ही औरों को भी शक्तियों का सहयोग देने वाले होंगे।
- निरंतर एक बाबा से कनेक्शन होगा।

- निश्चयबुद्धि होंगे।
- निर्माणचित्त होंगे।
- पढाई मिस नहीं करेंगे।
- योगी, सहयोगी, सहजयोगी होंगे।
- मायाजीत होने के कारण स्वयं तथा अन्य के विघ्नविनाशक होंगे।
- ईश्वरीय नियम एवं धारणाओं पर चलने वाले होंगे। जितनी गहरी धारणा, उतने ही निर्माणचित्त होंगे।

बी.के. विजय बहन,  
डिप्टी मैनेजर,  
शिवमणी होम

## मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती स्मृति दिवस



शिवमणी होम निवासियों के द्वारा 24 जून को 'मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती स्मृति' दिवस मनाया गया। मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती हम सभी ब्राम्हण वत्सों के लिए प्रेरणा स्रोत रही हैं अतः मम्मा की शिक्षाओं एवं विशेषताओं को शिवमणी होम के निवासियों ने स्मरण किया। साथ ही सभी ने आदिशक्ति मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए निम्न प्रतिज्ञायें भी की—

- 1) मम्मा की तरह हम सदा रूहानी नशे में रहेंगे। बाबा मिला तो फिर क्या फिकर!
- 2) मम्मा की तरह ड्रामा पर संपूर्ण निश्चय रख नथिंग न्यू का पाठ पक्का करेंगे।
- 3) मम्मा की तरह हम भी दूसरों के गुण देखेंगे, गुणवान बनें व गुणदान करेंगे।
- 4) मम्मा की तरह हम भी रूहानियत व स्वमान में रह बाप से सर्व संबंध का स्नेह ले देही अभिमानी बनें।
- 5) मम्मा की तरह हम स्वयं में समाने की शक्ति बढ़ाएंगे और मम्मा के नक्शे कदम पर चल मम्मा समान बनने का पुरुषार्थ करेंगे।



## अनुपम दृश्यावली



21 जून को प्रभुप्रिया, जगतप्रिया, बापसमान आदरणीया दादी जानकीजी शिवमणी होम की फुलवाड़ी में पधारे तथा अपने आशीर्वाचनों से सबको तृप्त करते हुए कहा कि बाबा ने तीन शब्द पक्के कराये हैं— निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी। इन तीनों शब्दों की स्मृति से दृष्टि-वृत्ति भी पावन एवं नयन भी शीतल हो जाते हैं। शीतल नयन बहुत पॉवरफुल, रूहानी कशिश वाले, बाप से शक्ति खींच औरों को देने वाले होंगे। वह खुद भी सहज योगी का अनुभव करेंगे और जो अन्य आत्मायें संपर्क में आयेंगी, वह भी सहज योगी, स्वतःयोगी बन जायेंगी। इस प्रकार पॉवरफुल वचनों एवं दृष्टि से सर्व का मन मोह लिया।

## अनुपम दृश्यावली



4 अप्रैल को शांतिवन के वरिष्ठ राजयोगी बी.के. राजू भाई जी ने शिवमणी होम का अवलोकन किया तथा यहाँ के प्रशासन की विस्तृत जानकारी ली। शिवमणी परिवार से भी स्नेह मिलान किया तथा अपने अनुभव के रत्नों से सबको मालामाल भी किया।



25 मई को कर्नाटक के स्टेट चीफ कमिश्नर भ्राता पी.जी.आर. सिन्धिया जी ने शिवमणी होम का अवलोकन किया तथा यहाँ के प्रशासन की विस्तृत जानकारी ली।

## अनुपम दृश्यावली



21 जून, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर गेल कंपनी रिको, आबूरोड में पाँच दिवसीय योग शिविर में शिवमणी होम से फीजियोथेरेपिस्ट बी.के. मनीषा बहन, बी.के. चमन भाई एवं बी.के. प्रमोद भाई ने शारीरिक योगाभ्यास कराया तथा बी.के. चंदा बहन ने राजयोग मेडीटेशन के महत्व पर प्रकाश डाला।



21 जून, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर इंडियन ऑइल कंपनी, रिको, आबूरोड में योग शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें शिवमणी होम से बी.के. चमन भाई, बी.के. प्रमोद भाई व बी.के. मनीषा बहन ने शारीरिक योगाभ्यास कराया तथा बी.के. हर्षा बहन ने राजयोग मेडीटेशन के महत्व पर प्रकाश डाला।

# अनुपम दृश्यावली



शांतिवन में आयोजित समर्पण समारोह में शिवमणी होम से बी.के. वैशाली बहन, बी.के. वीणा बहन एवं बी.के. विद्या बहन भी सम्मिलित हुए एवं बी.के. प्रमोद भाई के समर्पित होने के हर्ष के उपलक्ष्य में शिवमणी होम में 28 जून को सर्व के सम्मान का कार्यक्रम भी रखा गया। जिसमें उन्होंने अपने अनुभवों से सर्व को लाभान्वित भी किया।



शिवमणी होम के प्रांगण में अतिउत्साह एवं भव्यता के साथ 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें सभी

बुजुर्गों को शारीरिक स्वास्थ्य के लिए योगासन कराया गया। साथ ही अखण्ड योग भट्टी में भी सभी ने भाग लिया। शिवमणी होम की डिप्टी मैनेजर बी.के. विजय बहन ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर अपनी शुभकामनायें व्यक्त करते हुए कहा शारीरिक व्यायाम के साथ-साथ राजयोग संपूर्ण स्वास्थ्य एवं सद्गुणों के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। राजयोग के द्वारा जीवन में त्याग, तपस्या, सदाचार आदि गुणों की धारणा से ही व्यक्ति महान बनता है। सद्गुणों को धारण करने वाले व्यक्ति ही समाज और परिवार में मान-सम्मान और प्रतिष्ठा पाते हैं। हम उसी व्यक्ति को अपना मित्र बनाना चाहते हैं, उसी की निकटता प्राप्त करना चाहते हैं, जो जीवन में अपने आदर्शों के कारण समाज में कुछ विशिष्ट स्थान रखता हो। मनुष्य की शक्ति स्वयं उसका मनोबल होता है। उसे अपने अंदर से ही शक्ति प्राप्त होती है। जो अपने अंदर से शक्ति प्राप्त नहीं कर पाता, उसे संसार में कहीं भी शक्ति नहीं मिल सकती। वास्तव में बाहरी वस्तुओं के आकर्षण और प्रलोभन ही व्यक्ति को कमजोर बनाते हैं, जबकि मनुष्य की आंतरिक शक्ति उसे संबल प्रदान करती है। आंतरिक शक्ति के विकास के लिए राजयोग का अभ्यास बहुत आवश्यक है। इससे हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में सहयोग मिलता है, शक्ति मिलती है तथा सद्गुणों का भी विकास होता है।

शिवमणी होम के प्रोजेक्ट मैनेजर ब्रह्माकुमार ओम भाई ने सर्व को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की बधाई दी तथा सर्व को संबोधित करते हुए कहा कि ईश्वरीय स्नेह, श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ चरित्रों के साथ सेवा में तत्पर रहने के लिए संपूर्ण स्वास्थ्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे जीवन का लक्ष्य विश्व कल्याण का कार्य है और इस लक्ष्य की प्राप्ति तभी संभव है जब लक्षण से संगठन को सुदृढ़ बनाने का कार्य होगा, इसके लिए अपनी जीवन शैली में परिवर्तन लाना ही विश्व परिवर्तन की प्रथम सीढ़ी है। स्वपरिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन होगा, चाहे वह परिवर्तन आंतरिक हो या बाहरी हो, क्योंकि योगासन के द्वारा स्व अनुशासन उत्पन्न तो होता ही है साथ ही मन भी स्वस्थ होता है। इस प्रकार राजयोग के महत्व एवं उसके फायदों पर प्रकाश डाला एवं हर्षोल्लास से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।



20 मई, बी.के. विजय बहन ने शिवमणी होम निवासियों के लिए 'संकल्पों को सफल बनाने का साधन' विषय पर ध्यान केन्द्रित कराते हुए कहा कि कोई भी कार्य करना हो तो उसके पहले संकल्प

किया जाता है फिर कर्म में लाया जाता है, परंतु वह संकल्प किस उद्देश्य से वा लक्ष्य से किया गया व उसमें कितनी सफलता मिली इसके लिए कई बातों पर अटेंशन देने की आवश्यकता है। संकल्प से लक्ष्य तक कैसे पहुँचे इस विषय पर चिंतन के मुख्य बिंदु इस प्रकार है—

- 1) संकल्प की तुलना यदि स्थूल बीज से करते हैं तो जैसे स्थूल बीज को बोने के लिए उसकी गुणवत्ता चेक की जाती है कि उसमें कोई कीड़ा आदि तो नहीं लगा, यदि ऐसा है तो वह बीज बोने से अंकुरित नहीं होगा। ठीक इसी प्रकार यदि हमारे संकल्प करने के पीछे यदि कोई स्वार्थ की भावना रूपी कीड़ा अथवा विकार की कोई बू होगी तो उस संकल्प रूपी बीज में अंकुरित होने की शक्ति नहीं होगी एवं सफलता नहीं मिलेगी।
- 2) जैसे स्थूल बीज को धूप व पानी की आवश्यकता है ऐसे संकल्प रूपी बीज को भी अटेंशन का पानी और चेकिंग की धूप देने की आवश्यकता है।
- 3) संकल्प रूपी बीज की धरनी है अवचेतन मन, तो जो संकल्प करें वह मन की गहराईयों से हो, ऊपर-ऊपर से नहीं तब ही वह फलीभूत होगा।
- 4) संकल्प रूपी बीज को फलीभूत करने का सहज साधन है— सदा बीज रूपी बाप से हर समय सर्व शक्तियों का बल स्वयं में भरते रहें। लेकिन निरंतर कनेक्शन न होने से, अन्य आत्माओं को वा साधनों को वृद्धि की विधि व आधार बना देते हैं, जिसके कारण मेहनत अधिक और सफलता कम हो जाती है, जिससे उमंग उत्साह भी कम हो जाता है।
- 5) संकल्प रूपी बीज फलीभूत हो उसके लिए ज्ञान चिंतन, श्रेष्ठ संग वा सत्संग आवश्यक है, तो संग की संभाल भी जरूरी है, चाहे संबंध संपर्क की हो या विचारों की।
- 6) जो भी संकल्प करें व उसमें यदि दृढ़ता हो तो विजयी बन जायेंगे। विचार में जब दृढ़ता आ जाती है तब वह संकल्प बन जाता है व फलीभूत होने लगता है।
- 7) सरलचित्त बनें तो सफलता मिलती रहेगी। ब्राम्हणों का मुख्य संस्कार ही सर्वस्व त्याग का है। त्याग से ही जीवन में सरलता व सहनशीलता का गुण आता है। सरलता के गुण में भोलेपन के साथ-साथ शक्तिरूप भी चाहिए। अगर शक्तिरूप



भूल सिर्फ भोले बनते तो माया का गोला लग जाता है। सरलता के गुण को धारण करने के लिए एक बात जरूरी है कि हमारी स्थिति स्तुति के आधार पर न हो।

8) पुराने संस्कारों का परिवर्तन आवश्यक है। वरना जितनी और जैसी सफलता हम चाहते हैं वैसी नहीं होगी।

9) स्वस्मृति व प्रभुस्मृति से समर्थ स्थिति बनाने का निरंतर अभ्यास आवश्यक है।

10) आदिस्वरूप व लक्ष्य सामने रखना है।

11) निरंतर स्मृति में रखना है कि अब घर जाना है।

10) ज्ञान व योग बल का प्रयोग करना है।

11) अंदर व बाहर से सच्चाई—सफाई भी आवश्यक है। इससे बाबा की मदद भी मिलती रहेगी क्योंकि सच्चे दिल पर साहेब राजी।

12) श्रेष्ठ संकल्प की गोपनीयता से रक्षा करना भी जरूरी है क्योंकि झाड़ अभी वृक्ष नहीं बना है। जैसे कि छोटे—छोटे पौधों को बाउण्ड्री लगाकर तेज हवा व जानवरों से रक्षा की जाती है, जब तक वे बड़े न हो जाए, वैसे ही श्रेष्ठ संकल्प की भी सुरक्षा माया के तूफानों से करनी आवश्यक है।

इस प्रकार इस वर्कशॉप में सभी ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया एवं इन चिंतन बिंदुओं पर सभी ने अपनी सुखद प्रतिक्रिया व्यक्त की।

## दिव्य दर्पण

मेरा जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ जहाँ भक्ति का माहौल था। मैं व्रत—उपवास भी बहुत करती थी। भगवान को पाने की तीव्रतम इच्छा थी। बहुत से प्रश्न मेरे मन में आते रहते थे, लेकिन मेरे अंतर्मन के प्रश्नों का उत्तर नहीं मिल रहा था; कि मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आई हूँ? मैं क्यों आई हूँ? जीवन क्या है? मेरे जीवन



क्या उद्देश्य है? मुझे जीवन में क्या करना चाहिए? मनुष्य की मृत्यु के बाद क्या होता है? आदि—आदि। मैं इन प्रश्नों की तलाश में थी। मेरे युगल राजस्थान के डुंगरपुर जिले में C.M.H.O. के पद पर कार्यरत थे। सन् 1985 में डॉक्टर्स कान्फ्रेस में माउंट आबू में आ चुके थे एवं सन् 2000 से डुंगरपुर की गीता पाठशाला में भी जाया करते थे। लेकिन मेरी भक्ति का पार्ट बचा था और सीनियर हायर सेकण्डरी स्कूल में प्रधानाध्यापिका होने के कारण व्यस्त दिनचर्या थी, तो मैं समय नहीं निकाल पा रही थी। अंततः सेवानिवृत्ति के पश्चात् सन् 2012 में साप्ताहिक पाठ्यक्रम के बाद से ही हम रेगुलर मुरली क्लास एवं ईश्वरीय मर्यादाओं व धारणाओं का पालन कर रहे

हैं। इसके पश्चात् मेरे युगल ट्रॉमा सेन्टर में सन् 2014 में सेवा करने आये तो मैं भी युगल के साथ यहाँ ही आ गई। ट्रॉमा सेन्टर में सेवा करते हमने शिवमणी होम देखा था और वहाँ रहने का निश्चय कर लिया था। लगभग एक वर्ष सेवा के बाद भी शिवमणी होम में स्थान रिक्त न होने के कारण हमें वापस लौटना पड़ता कि अचानक ही वहाँ के प्रशासन से संदेश मिला कि अभी ही एक रूम खाली हुआ है, यदि आप चाहे तो आ सकते हैं। हमारी खुशी का तो ठिकाना ही नहीं रहा हम तो सब सामान लेकर वापस घर जाने को निकले ही थे और बस गाड़ी घुमाकर सामान सहित शिवमणी होम में पहुँच गये। शिवमणी होम में हमारा आना एक सुखद आश्चर्य था। कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि हम ऐसे अनोखे, अनूठे और स्वप्नमय स्थान के रहवासी बनेंगे। यहाँ सब प्रकार का प्रबन्ध है। साफ, सुंदर परिसर, रहने के लिए एवं मनोरंजन का भी यहाँ भरपूर प्रबन्ध है। यहाँ समय—समय पर तरह—तरह के खेल, बैडमिन्टन, नृत्य, ड्रामा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पिकनिक आदि का आयोजन होता रहता है तथा प्रतिदिन शारीरिक व्यायाम भी करवाया जाता है। राष्ट्रीय और सामाजिक त्यौहारों पर विशेष कार्यक्रम किए जाते हैं। साथ ही सामूहिक जन्मदिवस भी अलौकिक रीति से सम्पन्न किए जाते हैं। यह स्थान कोई साधारण स्थान नहीं है बल्कि एक बहुत बड़ा आध्यात्मिक केन्द्र भी है। पूरा प्रांगण शांति और पवित्रता के प्रकम्पनों से तरंगित होता रहता है। कभी सोचा भी नहीं था यह स्थान इतना विशेष होगा। मधुबन आने के लिए कई—कई माह प्रतिक्षा करनी होती थी तब कहीं वर्ष में एक बार कुछ दिन के लिए आध्यात्मिक वातावरण मिलता था। किन्तु यहाँ रोज ही मधुबन है। प्रतिदिन की दिनचर्या और अलौकिक भाई बहनों का संग प्रति पल मधुबन का आभास कराता है। सुबह अमृतवेले का योग, प्रातः मुरली, दिन में आध्यात्मिक विषयों पर विभिन्न प्रकार का आयोजन होता रहता है। यह सब हमें जीवन को श्रेष्ठतम बनाने की दिशा प्रदान करता है। जीवन के अंतिम पड़ाव में इस स्थान से अधिक सुंदर, सुखमय और सुरक्षित स्थान कहाँ होगा। हर पल मेरा मन शुक्रिया के गीत गाता रहता है। मुझे भगवान मिल गया अब और कोई चाहना नहीं। शुक्रिया बाबा शुक्रिया।

बी.के. रीता मालवी

बी.के. डॉ.बी.एल.मालवी

रूम नं. 113,

शिवमणी होम

## भावभीनी श्रद्धांजलि

शिवमणी होम निवासियों की ओर से हृदय की गहराइयों से श्रद्धांजलि.....

बी.के. एम. एन. विश्वनाथ  
पुण्य तिथि-15 फरवरी 2019



बी.के. मेमी अली  
पुण्य तिथि-26 फरवरी 2019



बी.के. महादेव पाटिल  
पुण्य तिथि-7 मार्च 2019



बी.के. रामकुमार केजरीवाल  
पुण्य तिथि- 11 मई 2019



परिंदों को मजिलें मिलेगी यकीनन  
ये फैले हुए उनके पर बोलते हैं,  
अक्सर वे लोग खामोश रहते हैं  
जमाने में जिनके हुनर बोलते हैं।

**SHIVMANI GERIATRIC HOME**  
(Project of Global Hospital & Research Centre)  
Near Global Hospital Trauma Centre  
Taleti, Abu Road, Dist Sirohi  
Rajasthan (India) - 307 510  
9414092383; 9413372922 (Mobile)  
9414037045; 9875050933 (Manager)  
E-mail: [shivmani.opk@gmail.com](mailto:shivmani.opk@gmail.com)  
Website: [www.shivmani.org](http://www.shivmani.org)

### Feedback

Valuable feedback and information may be emailed at  
[shivmanihome@gmail.com](mailto:shivmanihome@gmail.com)